

सुप्रसन्न वसुधैव कुटुम्बकम्

४८१-२

२० अंनमही दिपंकनवृद्धाय ॥

कान्तयमृगकर्म दयालि

निधानं कन्यावनिष्ठकिंन

१ ॥ न किंचिद्दृष्टाद

द्विकीर्तय ॥ कला निपाद्यो

॥ ३० मंदकनूस्कुमान विविक्कपकेम

कमायराजनायिक विपुललाग्यमहा

रुसमरुवपूरुस्य ॥ आसंखदि ॥

कमायमवचंष्टुमिकनं वक्रसगं

द्विकीर्तय ॥ कला निपाद्यो

५

विष्णुनन ॥ लिवायकं ॥

यत्रिकमार्थयकन

रुमागकवावायमा

२ ॥ सायाजिकं सरुज

रुसमाधिकायकपाप्रवन्ति

२ ॥ सयिगवासायिगरुमिमलुल

किनिलयावागथगकस्यजगना

सयमलीकुजुधन ॥ १ ॥ याकास ॥

मीधयवासरुकथाददागिमगना

विष्णुनधनधनरागामं वृद्धसव्य

पदवन्नयनरुक्मधूप ॥ ४ ॥ विविक्तिं कथयन्सुयया नाज्जका मनि
 इति धाजगनातमाग्नेन ॥ ४ ॥ रुवयसो का निवयुर्वेनादिवय
 वृद्धवृधत्वपदं कथाम् ॥ ५ ॥ धीरवधुक् २
 कमसमाहितं वंदनां क
 ऊयान्वर्ति जगतामि न का प्रम्यं लं सो द ऊ नृपं यथर्दं दिवी क्षाल

क्रिया क्रि मना रु ना ४ यकु धिय यय्य न स द वा स न ॥ धूप ॥ १ ॥
 न गारि नात्मा ४ स समि
 न ना नी न ना ना म कि ति
 संधं म म ॥ १ १ ॥ जा
 स यान ना ना म नि रि द नी या ॥ या सा धि का धि न स मिस व ४

श्रीमानसोसानीनेथयदा नं॥ निमना॥ १२ ॥ यमीनवर्द्धमृदू
 यानिपागा मरुवना सुरुहिलेयधिष्ठीनिर्जयदा॥ न
 नरुर्वीनिमह्या४सनुय नृयासुषुमानुर्वीनि॥ विकी॥ १३ ॥ ४
 हुर्द्धरुनिकसंकासा नमसुषुसमविर्ग॥ ऊर्मिघनवन
 यनिपादयनिपुवृद्धवृधकृत्रऊर्मिवकानथग॥ विथा॥ १४ ॥

उयानरुंरुसुमनायुदागा मरुवनाहिरुविगाधनाय सुसंति
 कयादीः ऊर्गममहात्मा सगर्भेनवानिवनयानया ४४ मजा
 कनकन मूनिनायथ मंयुस्तिथापुकासगावनवर्द्धव
 यदानिसफ यद्भाव लीविनचिगा रुनमववाह सा
 याइका रुगनयानमिरुष नम्यहाल कामया॥ १५ ॥ रुकिरु

ता एव निरुगता मातृपुत्रयदाता नृपानमवसक्तिमुविनंद
नयानाजलश्रीधर्म स्वामिरुवतिनियनः सर्वलोका
स्यनार्थनामो गच्छ क नकिगहनः नृपवातागीतिः ॥ ५ ॥
मायहं हृष्टयधर्मम हात्मा हृष्टयनाकाशयधामुगीति
दिविदिना वाययस्यष्टसंधनदामहात्मायसर्मजगममहात्मा

कसाया ॥ १७ ॥ भयहानाति एवगितिनियनं सुखस्वीयदाना यमा
नामरुवतिरुया मूया नवाधिमार्गीयहानाति इतिन
हनरक्षनामिकीचिक यान्ता सासंयन्ताहवमिसरुसास
वयसर्वरथेवधामूच सकाया ॥ १८ ॥ मलुईरुनिकसं
का दारक्षगुलमववाभ्यवडिकायाददीतिरु जायकपलुनाम

हानास नामय ॥ १८ ॥ दत्तासीयिंगविनाः कअकविनविनाः निज
 पिनीवदार्कः प्रकीर्तान्ध स्वनीये ४ स नू विनवसने ख अलीवा
 नमालाः दिवीयामसुव मः सुगतसु गगनाः जा निनूयामना
 ऊह वक्रानं क्रगामदा ४ रु वक्रिय इममिसर्वधर्म स्वर्न सु
 चिवलया ॥ १९ ॥ स्वच्छ निष्ठी दिगमिग नद्य नर्म स्वला विनठीत

लः श्रीनिश्यामयं निः रुविलकं नऊसी द्या य रु द ऊलं ॥ कपूलवया
 ॥ २० ॥ धापी रु नगकी नरा च द व रु न सादिकी स्वीधमूना
 दिकीदानं ऊरथमिग रु ल रु व रु ॥ रु ल मूलादि ॥ २१ ॥
 विहिं वधान्या रु मि स वे जा न रु धा विनाय पु द दानि संधः
 ॐ रु रु ल न स्य रु व रु निर्यः स चार्थ काम स मय नि र्म द्या गा विहि ॥

॥ २२ ॥ विदि वधन्यादि रुनादिकं वल्लु विगार्य पुद दाजिसंघ
 ॥ ४४ ॥ हूलैगस्य नहमि नियमसर्वे हूलैय वरु वाधिमार्गे
 ॥ विदि वल्लु न्याय ॥ ॥ वालिनाय नीयु निताः कूरु दत्तागम ॥
 नमार्थविकामगुरु ॥ ॥ का हूलै हूलै दत्तागमि ॥ ॥
 धाया ॥ २३ ॥ राचम सुवद कयु नी की य न की विविध पृथक् नरु

कपुर्ग हव निरागय नायन मिध्वनं गनव लाय ददां निरव कु
 ॥ ॥ ॥ साचा कुमधि ॥ २४ ॥ व नवाना धमास पु ॥ ॥ नाजा
 हगर्व कुम हृदिकीस घल्लु राजनी दत्तागम सुवमध
 न ॥ ॥ जाव रुया ॥ २५ ॥ ॥ सुवर्ण नृय विविध धातु ज म म
 र्थवासी यादनी सुयनि पृथु न सु विधु पाय हल्लु ददा नि सु

गगायससांघिकाय॥१॥स्थानस्ययूरुमसमरुलमयमययंदिठ
 यायया॥२॥॥क्रीदिका
 नदनसमानस्यजाय
 हगवांसयनसर्वनरु
 इनस्यरुलमया॥जाकिया॥२॥॥हस्यनगनयुवांनवक

याददाजननधम्मज्ञानसमाविकध
 ननल्लय॥१॥यजायायया॥२॥॥
 समाविकजिनसंवायजादुद्यामी
 हस्यनगनयुवांनवक

ननयवानितकसमंघमिनावारधनरुषयमयावकनकनवि
 ननारगधनस्थानयुरु
 कर्मस्यमूदागमपविज
 रुकुषवाधिविनिजी
 या॥२॥॥॥काइमयदानसकनवाविकनारुवाउरुलकन

कामयानघीरुनककिहकुका
 समनानस्यननागचयकीया
 रुनिविनीचनमहवाशाउलक
 नवाविकनारुवाउरुलकन

II-178

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

मानूष्यामहाशागीरुविष्वा निराधुता विद्या ॥ ३० ॥ हा मंदि
गायत्रीनयनहा निमृगीधि
मनाहूवानि चिंतापम
वूनदा नैल निगीकुलि
नयनाहिनात्मा रक्षमाधवा ॥ ४१ ॥ निवका मत्र दन पति ॥ ४२ ॥

वका ४२ ॥ रक्षमाधवा गयनिमृका
गविनहा दिनिजमहागिनी

नस्यवगा हीनदत्ता नमूखा

नयनाहिनात्मा रक्षमाधवा ॥ ४१ ॥ निवका मत्र दन पति ॥ ४२ ॥